उत्तराखण्ड में बुक्सा जनजाति की संस्कृति

1. डॉ0 आबिदा
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अगस्त्यमुनि, रूद्रप्रयाग।

2. डॉ0 पूनम भूषण
असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अगस्त्यमुनि, रूद्रप्रयाग।

प्रत्येक समाज में कई छोटे–छोटे सामाजिक समूह होते हैं। जो व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों के परिणाम स्वरूप बनते हैं।

जनजातीय समाजों में सामाजिक संगठन का निर्माण करने वाले समूहों में नातेदारी एवं स्थानीयता के आधार पर बने समूह अधिक महत्वपूर्ण हैं। जनजातीयों को उनकी निवास की प्रकृति एवं स्थानीयता के आधार पर खानाबदोशी जत्था, खानाबदोशी झुण्ड तथा जनजाति आदि भागों में बांटा जा सकता है।

भारत के विभिन्न राज्यों में जनजातियां निवास करती हैं। उत्तराखण्ड के कुछ जनपदों में विभिन्न जनजातीय समाज निवास करता है। जिनकी अपनी जीवन शैली होती है, यह आत्मनिर्भर होते हैं।

वर्ष 1967 में भारत सरकार द्वारा 5 जनजातियां क्रमशः थारू, बुक्सा, भोटिया, राजी और जौनसारी को अनुसूचित जातियां घोषित किया गया है। बुक्सा तथा राजी जनजाति काफी पिछड़ी होने के कारण उन्हें आदिम समूह में रखा गया है।

उत्तराखण्ड में बुक्सा जनजाति देहरादून जिले के सहसपुर, डोईवाला विकासखण्ड, पौड़ी गढ़वाल के दुगड्डा विकासखण्ड हरिद्वार के बहादराबाद, उधमसिंह नगर के बाजपुर, गदरपुर, काशीपुर विकासखण्ड, नैनीताल के रामनगर क्षेत्र में निवास करती है। 1991 की जनगणना के अनुसार इनकी जनसंख्या 42027 थी। नैनीताल जनपद में ही 60 प्रतिशत बुक्सा जनजाति विभिन्न विकासखण्ड में निवास करती है। बोक्सा जनजाति डोईवाला और सहसपुर विकासखण्डों के 173 गॉवों में रहते हैं।

यह अपनें को पंवार वंशीय राजपूत मानते हैं। अंग्रेज अधिकारी इलियट ने लिखा है कि बोक्सा समुदाय के लोग शारदा नदी के किनारे बनबसा आकर बसे। एक युद्ध में कुमाउॅ के राजा की सहायता प्राप्त करने पर इनके पूर्वज उदयजीत को जागीर प्राप्त हुई। बाद मे बनबसा से आकर जिस स्थान पर यह रहने लगे वह स्थान बुकसाड़ कहलाया।

बुक्सा जनजाति या किसी भी जनजाति समाज की अपनी संस्कृति, परम्परा होती है। उनका अपना निश्चित क्षेत्र, निवास होता है, वह खानाबदोश तथा प्रकृति के निकट रहने वाली है। यह परम्परा पर आधारित जीवन व्यतीत करते हैं। लेकिन वर्तमान में जनजाति कि रहन–सहन के तरीकों में परिवर्तन आया है।

जनजाति की अपनी शैक्षिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक समस्यायें होती हैं। जिस पर विभिन्न संगठनों द्वारा प्रयास किया जाता रहा है। बुक्सा जनजाति अपनी परम्परा तथा संस्कृति को मानती है। चैती, नौवी होली, दीपावली इनके प्रमुख त्यौहार हैं।

उत्तराखण्ड के नैनीताल, पौड़ी, और देहरादून जिले के ग्रामीण बस्तियों में निवास करने वाली जनजाति में आज भी कन्या को खरीदा जाता है, इसका कारण यह है कि इस जनजाति में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या काफी कम है। बुक्सा जनजाति की कन्या विवाह से पहले परिवार के आर्थिक उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

लेकिन विवाह के बाद कन्या पक्ष कन्या के सहयोग से मिलने वाले लाभ से वंचित हो जाता है, जिसकी भरपाई के रूप में कन्या का पिता कन्या का मूल्य पाने का अधिकारी माना जाता है। बुक्सा जनजाति में कन्या की विवाह की उम्र 18–20 वर्ष और वर की उम्र 20–24 वर्ष होती है। बोक्सा जनजाति के लोग अन्य से विवाह नहीं करते। विवाह युवक एवं युवतियों के परिपक्व होने पर होता है।

अंतर्जातीय ओर बहिर्गोत्रीय विवाह की प्रथा इस आदिवासीय समाज में प्रचलित है।

बुक्सा जनजाति शक्ति के प्रतीक के रूप में पीपल के पेड़ की पूजा करते हैं। इस जनजाति समाज की अर्थव्यवस्था जंगलों पर आधारित है। लेकिन अब जंगल कटने से केवल खेती या मजदूरी पर ही निर्भर है।

बुक्सा जनजाति की ललित कलाएं परम्परागत होती हैं। लकिन गैर जनजातीय समाज के सम्पर्क में आने के कारण इनकी ललित कलाओं के प्रति रूझान में कमी आयी है। ये अपने को देवी पूजक मानते हैं। प्रत्येक प्रधान के घर के सामने 'ग्राम खेड़ी देवी' का मंदिर होता है। ग्राम खेडी देवी को ' भवानी' भी कहा जाता है। बुकसाड के बोक्सा लोग साकरिया देवता की पूजा भी करते हैं।

यह लोग जादू–टोने तथा झाड़ फूंक पर अधिक विश्वास करते हैं। कोई कार्य बिगड़ने, रोगग्रस्त तथा दुर्घटना आदि होने पर भूत–प्रेत को इसका कारण मानते हैं। भूत–प्रेत के लिए, मुर्गे तथा बकरी की बलि दी जाती है। यह अंधविश्वासी तथा परम्परा को मानते हैं। इसमें तंत्र–मंत्र विद्या के ज्ञाता व्यक्ति को 'भरारे' नाम से जाना जाता है। यह लोग मृतक व्यक्ति का दाह संस्कार करते हैं। पहले यह लोग शव को दफना देते थे।

बुक्सा जनजाति के लोगों का मुख्य भोजन मछली व चावल है। यह बड़े चाव से इसे खाते हैं। दाल–रोटी और सब्जी का अपने भोजन में प्रचुरता से इस्तेमाल करते हैं। नशीली चीजों और द्रव्यों में पुरूष देशी हुक्के, बीड़ी सिगरेट, शराब, कच्ची ताड़ी और सुल्फे का प्रयोग करते हैं। बुक्सा जनजाति में पिता के नाम पर वंश चलता है। जो घर का ज्येष्ठ पुरूष होता है वह परिवार का मुखिया होता है। बोक्सा जनजाति आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई है। ये कृषि कार्य भी करतें हैं, लकिन सीमित भूमि व कम उत्पादन के कारण इन्हें बनियों से उधार लेना पडता है, जिसके कारण इनका शोषण भी किया जाता है। गॉव में समिति भी होती है। जिसका प्रमुख मुखिया कहलाता है। इस समिति का कार्य पारिवारिक मतभेदों में निर्णय देना होता है।

गैर जनजातीय लोगों के सम्पर्क में आने के कारण बुक्सा जनजाति में परम्परागत विवाह पद्धति के आधार समारोह का प्रचलन कम होता जा रहा है। अधिकांश लोग अन्य समुदायों व आधुनिकता के प्रभाव में आकर आधुनिक विवाह पद्धति की ओर आकर्षित हो रहे है। किन्तु वह परम्परागत रीति–रिवाजों को भी अपना रहे हैं। इस प्रकार मिश्रित रूप में विवाह तरीकों का प्रयोग करने वाले बुक्सा लोगों की संख्या तीन चौथाई है।

ईसाई मिशनरियां अपनी चमक–दमक से युवाओं को आकर्षित कर रही हैं। यूवा अपनी प्राचीन संस्कृति को ही अपने पिछड़ेपन का कारण मानता है। इस वर्ग की अपनी पुश्तैनी खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज के प्रति ईसाई मिशनरियों लाभ उठा रही हैं।

इस्लाम धर्म का प्रभाव देहरादून व पौड़ी क्षेत्र में है। यहॉ के लोग सूअर का मांस नहीं खाते हैं। कुछ बुक्सा लोग हजरत पैगम्बर तथा उनकी बेटी फातिमा बीबी के भक्त हैं।

दैनिक जागरण के 24 जनवरी 2012 में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार नियमों को ताक पर रखकर बुक्सा जनजाति के लोगों की जमीन की खरीद फरोख्त की जा रही है। गढ़वाल के प्रवेश द्वार पर शहर कोटद्वार को बसाने वाली बुक्सा जनजाति खुद बेघर होने के कगार पर है। अशिक्षा और मांस मदिरा के शौक ने इस जनजाति को समाप्त कर दिया है।

आधुनिक समाज के सम्पर्क में आने के कारण बुक्सा जनजाति की शिक्षा, व्यवसाय, खानपान, रहन–सहन आदि पर प्रभाव पड़ा है। आज अधिकांश लोग अपनी परम्परा, संस्कृति, रीति–रिवाज को कम महत्व देने लगे हैं। वह आधुनिक समाज की व्यवस्था को अपना रहे हैं। आज सरकार द्वारा इनकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में सरकार तथा अनेक मिशनरियों के सहयोग से इनके जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है। आधुनिक समाज का प्रभाव भी प्रत्यक्ष रूप से इन लोगों पर दिखाई पड़ता है। सरकार द्वारा अनेक सुविधायें इन्हें प्रदान की जा रही हैं।

निष्कर्ष– जनजाति समाज पर आधुनिक समाज का प्रभाव पड़ा है। साथ ही सरकार द्वारा चलाये जा रहे कल्याणकारी कार्यक्रमों के माध्यम से इस समाज के लोगों के जीवन पर प्रभाव पड़ा है। इनका विकास हो रहा है। निरन्तर प्रयास से जनजातीय समाज की स्थिति में सुधार हो रहा है।

सन्दर्भ सूचीः–

- बलोदी राजेन्द्र प्रसाद 2010 उत्तराखण्ड समग्र ज्ञानकोश बिनसर पब्लिशिंग कं0 पृ0सं0 181–183
- रावत जयसिंह, 2013 उत्तराखण्ड जनजातियों का इतिहास, विनर पब्लिशिंग कं0 पृ0सं0 176
- गुप्ता एम.एल. एवं डी.डी. शर्मा, 2004 समाजशास्त्र, आगराः साहित्य भवन पब्लिकेशन।
- वर्मा सुभाष चन्द्र 2016 उत्तराखण्ड की थारू एवं बुक्सा जनजातियां, आर.पी. पब्लिकेशन्स पृ0सं0–21
- m.livehindustan.com